कवि सम्मेलन

प्रस्तुति – तपिश शास्त्री, उदयपुर

- **संचालक**– सभी रसिकजनों को जय जिनेन्द्र! आप सभी का इस सुन्दर कवि सम्मेलन में भावभीना स्वागत है। सर्वप्रथम में आज के कार्यक्रम की शोभा को बढ़ाने के लिए देश- विदेश से पधारे हुए समस्त कविगणों को यहाँ मंच पर आमंत्रित करता हूँ और सभी जोरदार तालियों से इन कवियों का यहाँ स्वागत करें....

  बहुत-बहुत धन्यवाद पधारे हुए सभी कवियों का.... ये हम सभी के लिए हर्ष की बात है आज इस नगर की महान धरा पर हमारे बीच बहुत निवेदन के बाद ये सभी कविगण यहाँ पधारे हैं। कुछ पंक्तियों से सभी का यहाँ स्वागत करते हैं-

खुशियों की झोली भर-भर नया सवेरा आये,
आतम की गरिमा का झंडा दुनिया में लहराये।
सुन्दर है वर्तमान और अतिसुन्दर हो आगत,
कविगणों का अभिनन्दन है आप सभी का स्वागत।।

प्रत्येक शुभ कार्य का निर्विघ्न समापन हो जाये इसलिए मंगलाचरण करने की परम्परा रही है। इस आध्यात्मिक कविसम्मेलन का प्रारंभ करते हुए मैं सर्वप्रथम हमारे बीच आमंत्रित करना चाहता हूँ कवि मंगलमय जी को, जो की मंगल धाम, मंगल मार्ग, मंगलपुर से हमारे बीच उपस्थित हुए हैं, जोरदार तालियों से आपका यहाँ स्वागत हैं-

1. **कवि मंगलमय-** (कुरता-पायजामा)

मंगलमय हैं मंगल करते पाँचों परमेष्ठी भगवान,
मंगलमय ये मार्ग बताते हमको देते सुख की खान।
इसीलिए हम मंगल करते जिससे हो मंगलमय काम,
जय हो मंगलमय जिनवर की, होवें मंगल आठो याम।।

- **संचालक**- धन्यवाद कवि मंगलमय जी, इस मंगलमय मंगलाचरण के उपरान्त अब मैं भगवान महावीर को नमस्कार करने वाले एक सुन्दर कविता सुनाने के लिए बुला रहा हूँ कवि वर्धमान जी को, वे आये और कविता सुनाये....

2. **कवि वर्धमान-** (नार्मल कपडें)

मेरे नयनों की ज्योति मस्तक का चन्दन, मेरा अन्धकार मेरे कर्मों का बंधन।
महावीर स्वामी त्रिशला के नन्दन, तुमको हो मेरा शत शत वंदन।।

धागों को जोड़ा तो चीर बन गया, इन्द्रियों को जोया तो शरीर बन गया।
नाम तो प्रभु का सिर्फ वर्धमान था, कर्मों को तोडा तो महावीर बन गया।।

- **संचालक-** बहुत सुन्दर, कवि वर्धमान ने भगवान महावीर का स्मरण कर इस कार्यक्रम को और भी सुन्दर बना दिया है अब मैं आह्वान करना चाहता हूँ चेतनपुरी से पधारे कवि चेतनराज जी को, उनके स्वागत में कुछ पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं-

बहुत ख़ुशी का अवसर आया आओ सकल समाज।
कविता सुनाने यहाँ पधारे कविवर चेतनराज॥

3. **कवि चेतनराज-** (कुर्ता-पायजामा)

आप सभी अध्यात्म प्रेमी जनों को मेरा सादर शुद्धात्म वंदन, मैं दो पंक्तियों में आप सभी को अध्यात्म का सार बता रहा हूँ, ध्यान से सुनिए-

देवालय में देव नहीं है, अपने अन्दर देव हैं।
अंतर्मुख तु देख स्वयं ही महादेव स्वयमेव हैं॥

इसी तरह कुछ और पंक्तियाँ सुनाना चाहता हूँ-

पर विभव की नहीं कालिमा जहाँ न हाहाकार सखे,
जन्म-मरण का तोड़ के बंधन चलो चले उसपार सखे।
है अनंत सौन्दर्य अनुपम होती नहीं जहाँ हलचल,
निज वैभव से गुणप्रसूत है सुरभित डाली सौम्य तरल।
श्रद्धा-ज्ञान-चारित्र त्रिवेणी निजपर को हितकार सखे,
जन्म-मरण का तो के बंधन चलो चले उस पर सखे॥

- **संचालक-** कवि चेतनराज की सुनकर मुझे भी इसी तरह की पंक्तियाँ याद आ रही है-

कोई किसी को दे सकता क्या कर ले जरा विचार सखे,
अपने-अपने भावों में हैं, सबका ही संसार सखे।
सहज-शुद्ध चैतन्यधारमयबहती अन्दर धर सखे,
अपने को ही करूँ समर्पित मैं अपना यह प्यार सखे॥

अब मैं आपके बीच पंजाब से पधारे कवि को बुला रहा हूँ-

जिनकी कविता को सुनने से मिलता सौख्य अपार।
ऐसी प्यारी कविता लेकर आये कवि करतार॥

4. **कवि करतार-** (पंजाबी लुंगी, कुर्ता- भंगड़ा करते हुए प्रवेश)

आज के प्रत्येक मानव की बात को दो पंक्तियों में बताने का प्रयास करूँगा, पसंद आये तो ताली जरुर बजाना-

साई इतना दीजिये, जामैं बैंक समाय। कोठी रीति न रहे, पेटी भी भर जाय॥

- **संचालक-** ठहरो-ठहरो कवि महोदय, आपकी कविता के बारे में मैं भी कुछ कहना चाहता हूँ-

तुम पेट भरो पेटी न भरो, तुम सेठ न बनो समेटी न बनो।
तुम पुण्योदय से धनी बनों, पर औरन को धन तो न हरो॥

हाँ, अब आप अपनी आगे की कविता सुनाने के लिए स्वतंत्र है-

5. **कवि करतार-** जी बिल्कुल-

कोई कहता है मैं सोने के महल बनवाऊंगा,
कोई कहता है मैं प्रधानमंत्री बन जाऊंगा।
पर तूने ये तो सोचा होता की तेरे जीवन की क्या औकात है?
चार दिन की चांदनी फिर अँधेरी रात है।।

- **संचालक-** समझ में आया आप लोगों को कि कवि क्या कहना चाहते हैं, मैं समझाता हूँ-

वक्त पर जो वक्त की जो कदर नहीं करता है।
वक्त भी वक्त पर उसे कमबख्त बना देता है।।

अब मैं आमंत्रित कर रहा हूँ कवयित्री भण्डारनायके जी को, जो पधारी हैं रावण के देश लंका से अर्थात् श्रीलंका से। उनके समान में दो पंक्तियाँ प्रस्तुत है-

रावण की नगरी से आई जो अच्छी कवयित्री।
वे भण्डारनायके आकर खोले अपनी पत्री।।

6. **कवयित्री भंडारनायके-** (साड़ी)

महाप्रतापी रावण के संग मैं भी वैभव नहीं गया,
कौरव दल सम्राट सिकंदर हाथ पसारे चला गया।
बड़े-बड़े राजा-महाराजा जिसे संग न ले जा पाए,
तुम किस खेत की मूली हो जो इसे साथ लेने आये।।

अब कुछ पंक्तियों में मैं परमानेंट सुख को प्राप्त करने का तरीका बता रही हूँ, जरा ध्यान से सुनिए-

आये हैं तो जायेंगे सर अफसर सरवेन्ट,
किसी को हार्ट अटैक तो किसी का एक्सीडेंट।
अगर चाहते हों सुख परमानेंट,
तो कुन्दकुन्द के बनों एजेन्ट, तब मुक्ति मिलेगी परमानेंट।।

- **संचालक-** सच ही कहा है-

मौत मित्र की तरह आती है, जिंदगी फिर भी बिखर जाती है।
तुम्हे तो आदत है जीने मरने की, मौत बदनाम हुई जाती है।।

अब मैं बुला रहा हूँ, तमिलनाडु से पधारे कवि ए. नाभिराजन को, जो की तमिलभाषी है, उन्हें हिन्दी नहीं आती है फिरभी इन्होने हमारे विशेष आग्रह पर हमारे कवि सम्मेलन में आने के लिए हिन्दी सीखी है। हाँ तो आइये कवि ए. नाभिराजन जी...

7. **कवि ए. नाभिराजन-** (सफेद लुंगी, सफेद हाफ शर्ट, सफेद तिलक)

वणक्कम जी...वणक्कम जी....
अय यय यो जी. अमको इन्दी नई आता जी, अमारी बासा तमिल तमिल, फिर बी आप लोग का कारण इन्दी लिका है जी-

जो भूल कर मुस्कुराएँ उसे शैतान कहते हैं जी,
जो भूल पर न पछताएँ उसे नादान कहते हैं जी।
जो भूल से कुछ सीख जाये उसे बुद्धिमान कहते हैं जी,
और जो कभी भूल न करें उसे भगवान कहते हैं जी।।

अय यय यो जी, मैं चार पंक्तियाँ और बोलना चाहता हूँ जी, तो सुनिए जी-

माली वीरान को गुलिस्तान बना देता है जी,
आचरण हैवान को इंसान बना देता है जी।
मैं महावीर की बात करता हूँ किसी दुसरे की नहीं,
धर्म इंसान को भगवान बना देता है जी...

- **संचालक**- इसीलिए तो मैं आप सभी से धर्म करने के लिए कहता हूँ, क्योंकि

बीतने वाली घडी को कौन लौटा पायेगा,
इस धरा का इस धरा पर सब धरा रह जाएगा।
जिंदगी भर का कमाया साथ में क्या जाएगा,
यह सुअवसर खो दिया तो अन्त में पछतायेगा।।

अब मैं आवाज दे रहा हूँ बनारस से पधारे कवि शराफत को, उनके लिए दो पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं-

दिखने में हैं सीधे सादे- लेकिन है पूरी यह आफत।
बनारस से पधारे हैं, हमारे कवि मियाँ शराफत।।

8. **कवि शराफत**- (रंगीन, कुरता पायजामा, एक शोल)
मैं आप जैसे अज्ञानियों और मूर्खों की सभा में क्या बोलु/ चलो, मंगल, उत्तम और शरण कौन-कौन से होते हैं यह ही बता देता हूँ-

चार मंगल- **सोना मंगलं, चांदी मंगलं,**

रुपया मंगलं, पत्नी मंगलं।

चार उत्तम- **पुत्र लोगुत्तमा, धंधा लोगुत्तमा,**

तिजोरी लोगुत्तमा, ग्राहक लोगुत्तमा।

चार शरण- **सासु शरणं पव्वज्जामी, ससुर शरणं पव्वज्जामी।**

मोबाइल शरणं पव्वज्जामी टीवी शरणं पव्वज्जामी।।

- **संचालक**- भारत के सर्वाधिक वर्षा वाले स्थान चेरापूंजी से पधारे चकचकायमान कवि चिकचिकचंद को, वे चकते हुए आये और इस चमन को चमकाएं,

अपने-अपने घर की बाते सब कर दो अब बंद।
जिनवाणी का सार बताने आये कवि चिकचिकचंद।।

9. **कवि चिकचिकचंद-** (रैन कोट, छोटा छाता)

जब कलकत्ता में अमिताभ बच्चन का मंदिर बनने की बात सुनी तो मुझसे रहा न गया और मैंने एक कविता लिख डाली, जो इस प्रकार है-

फूलों से भरे गुलशन वीरान हो गए,
अश्लील उपन्यास ही पुराण हो गए।
मन्दिरों के शास्त्रों में तुम पाओगे ही क्या,
जब फ़िल्मी देवता ही तुम्हारे भगवान हो गए॥

अब मैं कलयुग की नारियों के बारे में चंद पंक्तियाँ पेश करना चाहता हूँ-

बहुए बिटिय सासे ननदे सब कलयुग की नारी,
मंदिर जी में आकर करती घर की चर्चा सारी।
यही बनाती दाल-साग और करती तु तु मैं मैं,
करके श्रृंगार के पूछती कैसी लगती हूँ मैं॥

- **संचालक-** अब मैं आप लोगों के समक्ष पेश कर रहा हूँ झुमरीतलैया से पधारी कवयित्री झुमरकली जी को, वे झूमते-झूमते आये और अपनी झुमने वाली कविता से हम सभी को झुमायें.....

10. **कवयित्री झुमरकली-** (लहंगा-चुनरी)

पहले मैं नारियों का मजाक बनाए वाले कवि चिकचिकचंद की चिकचिक बंद कर देना चाहती हूँ। सुनो चिकचिकचंद-

तुम नारी नारी मत कहो, नारी नर की खान।
नारी से पैदा हुए चौबीसों भगवान॥

अब सुनाती हूँ मैं आपको अपनी कविता। मैं आप लोगों को पापा की परिभाषा बताना चाहती हूँ। और हाँ नारियों की गलतियां देखने वाले पुरुष सुन ले की वे कितने पानी में हैं-

पहला पाप स्वयं को भूलें, दूजा पाप विवाह कर फूलें।
तीजा पाप सुता-सुत जाए,तब भोंदू पाप कहलाये॥

11. **संचालक-** वाह, कवि झुमरकली ने अपनी कविताओं से कवि चिकचिकचंद को जो मुहतोड़ जवाब दिया है, उसके लिए जोरदार तालियाँ...

जिनके एक-एक मुक्तक में भरा हुआ है आगम।
ऐसे मुक्तक हमें सुनाने आय कवि परमागम॥

12. **कवि परमागम-** (सफेद कुरता-पायजामा)

मैं आप लोगों को अतीन्द्रिय आनंद के सरोवर में सरोबार होने की विधि संक्षेप में बताना चाहता हूँ। ध्यान से सुनिए-

पर से खस, स्व में बस
आएगा आत्मा में अतीन्द्रिय रस

यही है अध्यात्म का कस
इतना करो तो बस।।

13. **संचालक-** वाह, कविराज ने तो अध्यात्म रूपी फल का रस हमें चखाया, वास्तव में हमारा कर्तव्य है ही इतना। इतनी सारे हिन्दी कवियों के बीच में अब मैं बुलाना चाहता हूँ मैडम एलिजाबेथ को जो अमेरिका से की राजधानी वाशिंगटन से हमारे बीच पधारी हैं-

14. **मैडम एलिजाबेथ-**

Please listen to my poem very quietly....

There is nothing good or bad, but our thinking makes it so.
If you don't want to be sad, so don't go there but here go.

15. **संचालक-** लगता है आप लोगों को मैडम की पोयम समझ में नहीं आई। कोई बात नहीं मैं आपको हिन्दी में समझा देता हूँ। उनका कहना था-

जगत में कोई इष्ट नहीं होता,
जगत में कोई अनिष्ट नहीं होता।
उधर मत देख इधर देख ओ भव्य,
आत्मा को जाने बिना कोई संतुष्ट नहीं होता।।

मैं मैडम एलिजाबेथ से रिक्वेस्ट करता हूँ वो थोडा सा अपनी पोयम को हिन्दी में ही सुनाने की कोशिश करे जिससे हम लोगों को समझ में आ सके,

16. **मैडम एलिजाबेथ-** संचालक सर के आर्डर को एक्सेप्ट कर मैं आपको हिन्दी में कुछ सुनाने की कोशिश करती हूँ

अमेरिका में फोने कभी डेड वेड होते नहीं, टेंशन से आदमी भले ही मर जाते हैं,
बिजली नहीं भागती भले बीवी भाग जाये, नौकर और नौकरानी कार में ही आते हैं।
आप न नहाये तो और बात है मगर, पानी बाथरूम में चौबीस घंटे आता है,
सारी सुख सुविधाएँ हैं तन के लिए मगर, अपनी आत्मा का वहाँ फ्यूज उड़ जाता है।।

17. **संचालक-** क्या बात है, जो अमेरिका जैसे विदेशों में जाने के सपने देखते हो वे सभी इस बात को ध्यान से सुने। अब आपके सामने प्रकट हो रहे हैं बाटानगर से पधारे कविवर बूटा-

जिनकी कविताओं ने सबके हृदय चैन को लूटा।
अब मैं आवाज दे रहा हूँ, आये कविवर बूटा।।

18. **कवि बूटा-** (हाफ पेंट, हाफ शर्ट)

प्यासे को पानी चाहिए, नवासे को नानी चाहिए।
तीर्थों को दानी चाहिए, राजाओं को रानी चाहिए।
दुनिया की दुनिया जाने

मुझे तो मेरे भैया केवल एक जिनवाणी चाहिए।।

19. **संचालक-** बूटा जी ने जो कविता सुनाई उसमें जिनवाणी का सार हमारे सामने रख दिया है। और अब मैं आपके सामने बुला रहा हूँ वीर रस के ताप से तमतमायमान महान कवि तांडव जी को,

जिनका तांडव देख देखकर दर जाते थे पांडव।
ऐसा तांडव हमें दिखाने आये कवि तांडव।।

20. **कवि तांडव-** (लाल कुर्ता, लाल तिलक)

हे महावीर भगवान हम आपके आदर्शों पर जी रहे हैं,
पानी तो पानी शराब भी छान कर पी रहे हैं।।

मैं आप लोगों के सामने बहुत दिनों से पेट में पल रहे गुस्से को उगल देना चाहता हूँ-

मैं उनको तपाउंगा जिन्होंने मुझे तपाया है,
मैं उनको रुलाऊंगा जिन्होंने मुझे रुलाया है,
वीर महावीर का बेटा हूँ किसी कायर का नहीं,
मैं उन कर्मों को भगाउंगा जिन्हें महावीर ने भगाया है।।

21. **संचालक-** कवि तांडव को ज्यादा देर हम नहीं बोलने दे सकते क्योंकि उनकी गर्जना में यहाँ आग भी लग सकती है। तांडव जी ने सही ही कहा-

अग्नि बुझाने के लिए नीर चाहिए,
दुःख दर्द मिटाने के लिए पीर चाहिए।
एटम बमों के जोर से मिटती नहीं हिंसा,
हिंसा मिटाने के लिए महावीर चाहिए।।

तांडव जी के इस तांडव को देखने के बाद अब जरुरत है रस परिवर्तन की। अब हम बुला रहे है गुजरात से पधारे कवि रसिकभाई मेहता को, जो की सोनगढ़ से हमारे बीच पधारे हैं-

22. **रसिकभाई मेहता-** (गुजराती कुर्ता-पायजामा, जैकिट और पगड़ी)

हूँ गुजरातमां काठियावाड़ थी आयो हूँ, हवे हूँ मारी कविता वांचु छुं, बधा ध्यान थी सामंभडजो-

जहाँ-जहाँ भी गए आपने ऐसा जादू कर डाला,
जड़ तक को चेतन के चिन्मय रंग में रंग डाला।
देख सोनगढ़ महावीर मंदिर को दर्शक कहता है,
मंदिर की दीवारों को भी समयसारमय कर डाला।।

23. **संचालक-** अब मैं आपके सामने आमंत्रित कर रहा हूँ महाराष्ट्र से पधारी कवयित्री सेवंती बाई गणपत राव गोडबोले को,

हम सबके इस बंद ह्रदय के ताले को जो खोले।
ऐसी कविता हमें सुनाये सेवन्तीबाई गोडबोले

24. **सेवन्ती बाई गणपतराव गोडबोले-** (महाराष्ट्री साड़ी)

वीर प्रभु कह गए सभी से जैनी वह कहलायेगा,
दिन में भोजन छान के पानी, नित्य जिनालय जाएगा।।

लेकिन आजकल इन तीनो नियमों का निर्दोष पालन करने वाले जैन तो ढूँढने से भी नहीं मिलेंगे। आज के जैनी की दशा को कुछ पंक्तियों में प्रस्तुत कर रही हूँ-

न दिन में चैन न रात में चैन कैसा है यह जैन,
निश्चित ही इसके फूट गए हैं हिये के नैन।
इसलिए यह नहीं सुनता है जिनवाणी के बैन,
क्योंकि इसके लग रहे हैं पुद्गल के नैन,
इसलिए बेचारे को न दिन में चैन न रात में चैन,
अतः रहता है बैचैन इसलिए है यह झूठा जैन।।

25. संचालक- अब हमारे बीच हमारे राजस्थान के धोतीपुर से पधारे महान कवि धोतिमल जी को मैं आमंत्रित करना चाहता हूँ, उनके सम्बन्ध में दो पंक्तियाँ प्रस्तुत है-

आज करेंगे खूब ऐश और धर्म करेंगे कल।
ऐसा मत तू सोच कभी कहते कवि धोतीमल।।

26. कवि धोतीमल- (धोती-कुर्ता, माला, पगड़ी, चमकीला दुपट्टा)

हे महावीर भगवान हम आपका कितना ध्यान रखते हैं,
सुबह पांच बजे से लगाकर रात्रि 10 बजे तक आपकी जयजयकार करते हैं
पूजन विधान आदि कोई न कोई प्रोग्राम चलाते ही रहते है
पञ्चकल्याणक में आप तो क्या आप के बाप भी बन जाते हैं,
पर आप जैसे बनने के भाव कभी नहीं आते हैं।।

थोडा अपनी भाषा में भी कुछ सुनाना चाहता हूँ-

गोधन गजधन बाजधन और रतन धन खान,
जब आवें संतोष धन, सब धन धूलि समान।।

और सुनिए-

मन मैला तन ऊजरा या बगुला की टेक।
यातैं तो कौआ भला, भीतर बाहर एक।।